गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २८

अनुशासन का अर्थ है केन्द्रीभूत होना, यह देखना कि क्या उदय हो रहा है और क्या अस्त हो रहा है, साक्षी होना, और उस शक्ति को प्राप्त करना जिससे इस प्रक्रिया की एकदम शुरुआत को यानी काम और क्रोध के बीजों को सचमुच समझा जा सके। जब तुम क्रोध और अतृप्त इच्छा के पदचिह्नों का पता लगा सको और फिर भी तुम उनके पीछे-पीछे, जहाँ वे ले जाएँ, वहाँ जाने के लिए बाध्य न हो तब तुम अनुशासित व्यक्ति कहलाओगे, एक ऐसे व्यक्ति जिसने खुद को समझने की शक्ति अर्जित कर ली है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ५ "क्रोध से मुक्ति : भाग १," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ७४।